आध्यात्मिक विचारधारा वाला

सांसारिक रीति से बुद्धिमान बनना

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जब तक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Being Spiritually Minded And Earthly Wise)

आध्यात्मिक विचारधारा वाला

सांसारिक रीति से बुद्धिमान बनना

विषयसूची

परिचय

1. मसीही जीवन में तनाव 1

2. गलत चुनाव, गलतियाँ और उनके परिणाम 3

3. अतः, बुद्धिमान बनो 5

4. आध्यात्मिक फिर भी व्यावहारिक 6

5. बुद्धि—हमारा सुरक्षा कवच 8

6. परमेश्वर की भलाई 10

परिचय

रोमियों 8:28
हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं।

लेकिन गलत चुनावों, मूर्खतापूर्ण गलतियों, गलत जानकारी वाले निर्णयों, आलस्य के भयानक परिणामों और उचित तैयारी की कमी से उत्पन्न होने वाली अन्य विपदाओं के बारे में क्या? उन चीज़ों के बारे में क्या जो एक मसीही के स्वयं के कार्यों के कारण घटित होती हैं? उस मसीही के बारे में क्या जो इतना आध्यात्मिक विचारधारा वाला है कि उसने इस जीवन के मामलों में स्वयं को शिक्षित नहीं किया है? उन चीजों के बारे में क्या जो एक मसीही की अपनी गैरजिम्मेदारी के कारण उत्पन्न होती हैं? क्या परमेश्वर के कारण यह चीजें घटित हो रही है?

हम लगभग कई मसीहियों को अपरिहार्य दबावों के बीच पीड़ित और फंसे हुए देखते हैं। हमारा पवित्र शास्त्र बताता है कि परमेश्वर अपने लोगों को कठिन समय से गुजरने और उनका सामना करने की अनुमति देता है ताकि वे उनसे लाभ उठा सकेंऔर मजबूत बन सकें। लेकिन क्या पीड़ा और कठिनाइयों के ऐसे सभी दौर परमेश्वर द्वारा निर्धारित हैं?

यदि हम रुककर चीजों को थोड़ा बारीकी से जांचें, तो हम हमारे द्वारा लिए गए उन निर्णयों और चुनावों की पहचान कर सकते हैं जो अंततः उस परिस्थिति का कारण बनते हैं जिसमें हम कभी-कभी स्वयं को पाते हैं। यह हमारे गलत निर्णय थे—चाहे वे किसी भी रूप में रहे हों—उन दुर्घटनाओं का कारण बने जिनका हम सामना कर रहे होंगे। क्या हमें अपने अनुभवों को आध्यात्मिक बनाना चाहिए और ऐसे कष्टों के लिए परमेश्वर को जिम्मेदार ठहराना चाहिए? यह सच है कि सिद्ध न होने के कारण हम सभी गलतियाँ

करते हैं। जिन स्थितियों का हम पहली बार सामना करते हैं उनमें गलत निर्णय के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। हमारे द्वारा लिए गए गलत चुनाव उन योजनाओं को कैसे प्रभावित करते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनाई हैं? क्या हमारी गलतियाँ परमेश्वर के उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ कोू हमारे जीवन में पूरा होने से रोकती हैं, उसमे बदलाव ले आती हैं या किसी भी तरह से बाधित हो जाती हैं?

इस पुस्तक का उद्देश्य हमें हमारे मसीही विश्वास के व्यावहारिक पक्ष के प्रति जागृत करना है। इसका उद्देश्य हमें हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने में हमारी गंभीर जिम्मेदारी समझाना है। यह हमारे कार्यों को आध्यात्मिक बनाना बंद करने और उनके लिए स्वयं जिम्मेदारी लेने की चुनौती है। यह इस जीवन की कठिन परिस्थितियों में "समझदार बनने" का एक उपदेश है।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
मसीही जीवन में तनाव

कुलुस्सियों 3:1,2
[1] अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।
[2] पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक मसीही के जीवन में लगातार तनाव बना रहता है क्योंकि वह दूसरे राज्य के लोगों के बीच रहते हुए, जो कि परमेश्वर के राज्य के बिल्कुल विपरीत है *"पहले परमेश्वर के राज्य की खोज"* करने का प्रयास करता है। हम यहां पृथ्वी पर हैं, लेकिन हमें उन वस्तुओं की तलाश करनी है जो ऊपर हैं, जो स्वर्गीय हैं। पृथ्वी पर रहना अपने साथ करियर बनाने, "कुछ बनने," सफलता प्राप्त करने, धन इकट्ठा करने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व लेकर आता है, और फिर भी लगातार इन बातों में लिप्त रहने के बाद भी हमें अपने मन को—हमारे प्रेम को, हमारे हित को, हमारी इच्छाओं को, हमारे लक्ष्य को—स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाने का आग्रह करता है! यदि कोई सच्ची चुनौती है जो किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक, मानसिक और भावनात्मक क्षमताओं को बढ़ाती है, तो यही बातें प्रतीत होती है! लेकिन फिर, परमेश्वर हमें किसी ऐसी चीज़ के लिए चुनौती नहीं देगा जिसे हम पूरा करने में असमर्थ हों। उसने हमें यह आदेश केवल इसलिए दिया क्योंकि वह जानता है कि हम ऐसा कर सकते हैं—स्वयं की क्षमता द्वारा नहीं, बल्कि उसके द्वारा प्रदान की गई सामर्थ्य के द्वारा ऐसा कर सकते हैं। फिर भी, इस आदेश का अपने जीवन में पालन करना अपने साथ "तनाव" लेकर आता है जिसे "वास्तविक" दुनिया में काम करने वाला प्रत्येक आध्यात्मिक रूप से परिपक्व मसीही निश्चित रुप से इसे जानता है।

दैनिक जीवन में ऐसे कई "मुद्दे" हैं जहां मसीही दो दिशाओं में "खिंचाव" महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, सफलता के सही उपाय

क्या हैं? अस्थायी मानकों द्वारा सफलता को उपलब्धियों और कमाए गए धन के संदर्भ में मापा जाता है, जबकि परमेश्वर के राज्य में सफलता इस बात से निर्धारित होती है कि कोई व्यक्ति पिता की इच्छा को पूरा कर रहा है या नहीं। सांसारिक उपलब्धियों और धन कमाने में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन परमेश्वर की उच्च बुलाहट हमें *"इसे पाने के लिए अपना प्राण खोने"* की बात कहता है (मत्ती 16:25)। इसलिए, एक मसीही व्यक्ति को निरंतर संघर्ष का सामना करना पड़ता है क्योंकि वह जीवन में उन बिंदुओं पर पहुंचता है जहां उसे यह तय करना होता है कि उसे कौन सा रास्ता चुनना है—वह रास्ता जो उसे सांसारिक दृष्टि से सफल बनाता है या वह रास्ता जो उसे मसीह में परमेश्वर की उच्च बुलाहट को पूरा करने की दिशा में प्रगति की राह पर आगे बढ़ाता है।

कई "संघर्ष के क्षेत्रों" के अलावा, एक मसीही व्यक्ति को अपनी सांसारिक यात्रा के दौरान संसार और शैतान से लड़ना होगा। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, *"इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहार में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं"* (लूका 16:8)। ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन कभी-कभी चीजें इसी तरह होती हैं, खासकर जब ज्योति के लोग ज्ञान के दिव्य प्रावधानों का उपयोग करने में असफल होते हैं जो पिता उन्हें उपलब्ध कराते हैं। एक मसीही व्यक्ति को दैनिक जीवन की गतिविधियों में *"इस संसार के लोगों"* से जुड़ना, उनके साथ काम करना और कई मामलों में प्रतिस्पर्धा करना सीखना चाहिए। साथ ही, एक मसीही व्यक्ति शैतान की योजनाओं का लक्ष्य भी है। एक शैतान है जो मसीहीयों को परमेश्वर के उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ से भटकाने के लिए प्रलोभन देने और परेशान करने में प्रसन्न होता है।

2
गलत चुनाव, गलतियाँ और उनके परिणाम

गलातियों 6:7,8
[7] धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता; क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
[8] क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

इन तनावो और अन्य "तनावों" के दौरान, और साथ ही संसार के दबाव और शैतान के प्रलोभनों को जोड़ें, तो मसीही से गलतियाँ करने संभावना अवश्य है। ऐसा कहना जरूर निराशावादी और नकारात्मक लगता है, फिर भी यह सच है कि हम कभी-कभी जीवन में गलत चुनाव और बुरे निर्णय लेते हैं। उन अनेक विश्वासियों के बारे में सोचें जिन्होंने जीवन साथी चुनने की बात आने पर समझौता कर लिया। शैक्षणिक और करियर विकल्पों, निवास स्थान, मित्रों, वित्त प्रबंधन, रुचि आदि से संबंधित कई निर्णयों पर विचार करें। जैसे-जैसे कोई अपनी स्वर्गीय बुलाहट को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील रहता है, स्थितियां और भी गंभीर हो जाती हैं, क्योंकि उसे यह समझ आने लगता है कि जब वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—कहां, कब, क्या और कैसे का निर्णय लेता है—उसका प्रभाव इस धरती पर परमेश्वर के राज्य पर पड़ता है।

हमारे सभी निर्णयों के परिणाम होते हैं। हममें से कुछ लोगों विषय की गंभीरता को समझ नहीं पाते। यह जानते हुए कि हमारा परमेश्वर अनुगृहकारी परमेश्वर है, हम जाने-अनजाने में इसका फायदा उठाते हैं। हाँ, परमेश्वर के राज्य में सब कुछ अनुग्रह से है लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने हम पर कुछ जिम्मेदारिया डाली हैं। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन सच्चाइयों के अनुसार जियें जो हमें सिखाई गई हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम जो भी कार्य करें आलस्य को दूर रखकर परिश्रम से करें। यह

हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी देह को क्रूस पर चढ़ाएँ और संसार और शैतान के प्रलोभनों का विरोध करें। ये कुछ चीजें हैं जो प्रभु हमारे लिए नहीं करेंगे। वह हमें बुद्धि प्रदान करेगा (यदि हम इसके लिए उसकी खोज करें) लेकिन निर्णय हमें लेना है, और हमने जो निर्णय लिए हैं उनके परिणामों का सामना करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।

3
अतः, बुद्धिमान बनो

मत्ती 10:16
देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं, इसलिए साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो।

भेड़ें—परमेश्वर के लोग—विशेष रूप से मैत्रीपूर्ण वातावरण में नहीं जी रहे हैं! इस बारे में हमें चेतावनी देते हुए, प्रभु यीशु ने हमें *"सांपों के समान चतुर और कबूतरों के समान भोले"* बनने का निर्देश दिया। भले ही दुनिया शत्रुतापूर्ण और दुष्ट हो, हमें बुरे बनकर इसकी बुराई की बराबरी नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, हमें *"भलाई से बुराई को जीतना है"* (रोमियों 12:21)। हमें मसीह की कृपा और गुणों में चलना है। यीशु का यही मतलब था जब उसने हमसे एक अमैत्रीपूर्ण दुनिया के बीच में *"कबूतरों की तरह भोले"* बनने का आग्रह किया। यीशु की चेतावनी का दूसरा पहलू *"सांपों के समान चतुर"* होना था। इस संसार में रहते हुए हमें बुद्धिमान और विवेकशील बने रहना है। हमें अपनी आत्मिकता को ज्ञान और समझ के साथ जोड़ना होगा, विशेषकर इस जीवन की उलझनों के संबंध में। इस संसार के लोग प्रायः हमारी आत्मिकता से प्रभावित नहीं होते। क्योंकि, बहुत से लोग आध्यात्मिक विचारधारा वाले मसीहियों को घृणा और गहरी उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए, यदि हमें जीवित रहना है और संसार में विजयी रूप से जीना है तो हमें बुद्धिमानी से जीने की आवश्यकता होगी।

4
आध्यात्मिक फिर भी व्यावहारिक

आध्यात्मिक होना जितना अच्छा और विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, उतना ही आवश्यक है कि हम व्यावहारिक बनें। केवल आध्यात्मिक होना परमेश्वर के उद्देश्य को और पृथ्वी पर परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर पाने में सफलता प्राप्त कर उसे पूर्ण करने का आश्वासन नहीं देता है। व्यक्ति को आध्यात्मिकता को व्यावहारिक ज्ञान और समझ के साथ जोड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए, सिर्फ इसलिए कि आप मसीही हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आपका विवाह सफल होगा ही होगा। आपको अपने विवाह और परिवार के निर्माण में व्यावहारिक मुद्दों को समझने और एक खुशहाल परिवार बनाने के लिए उस समझ को लागू करने की आवश्यकता होगी। इसी तरह, यदि आप दशमांश देते हैं और साथ ही दान करते हैं और फिर वित्तीय रूप से समृद्ध होने की अपेक्षा करते हैं तो यह पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, आपको यह सीखना होगा कि आपको अपने बाकी पैसे का बुद्धिमानी से उपयोग कैसे करें।

सिर्फ इसलिए कि आपका विश्वास हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों को चंगा करते हैं और दिव्य स्वास्थ्य का आशीर्वाद देते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपने खाने की आदतों में अनुशासनहीन हो या अत्यधिक काम करके अपने शरीर का दुरुपयोग करें। परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे अनुशासन के साथ अपने शरीर की देखभाल करें। आख़िरकार, यह परमेश्वर का मंदिर है। इसकेअलावा, सिर्फ इसलिए कि आप जानते हैं कि आपकेजीवन में परमेश्वर की बुलाहट है, इसका मतलब यह नहीं है कि आप जीवन में लक्ष्यहीन रूप से "भटक" सकते हैं और फिर भी परमेश्वर ने आपकेलिए जो कुछ भी योजना बनाई है उसे पूरा करने की अपेक्षा कर सकते हैं। दूसरी ओर, आपको अपने जीवन में उनके आह्वान को पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार करने, प्रशिक्षित करने और सुसज्जित करने और परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता होगी।

मसीही सेवकाई में शामिल लोगों के लिए, पृथ्वी पर पूरी तरह से प्रभावी होने के लिए केवल एक शक्तिशाली अभिषेक होना पर्याप्त नहीं है। हमें यह सीखने की ज़रूरत है कि पृथ्वी पर परमेश्वर के लिए एक प्रभावशाली शक्ति बनने के लिए अपने सेवकाई के प्रयासों को किस प्रकार से व्यवस्थित, समन्वयित और उचित रूप से कार्यशील किया जाए। यह सच है कि यह अभिषेक है जो शैतान के जुए को नष्ट कर देता है और लोगों के जीवन से बोझ हटा देता है, लेकिन यह भी सच है कि कुप्रबंधन और उचित संगठन की कमी कई लोगों को उस अभिषेक के प्रभाव को अधिकतम करने से रोकती है जो उन्हें सौंपा गया है।

कभी-कभी, हम स्वयं परमेश्वर से भी अधिक आध्यात्मिक होने का दिखावा करते हैं! हम कभी-कभी इतने आध्यात्मिक हो जाते हैं कि हमारा कोई सांसारिक उपयोग नहीं रह जाता। मेरा मानना है कि परमेश्वर को भी ऐसी स्थितियों में अपने राज्य के लिए हम से कुछ करवाना कठिन हो जाता होगा! एक समय था जब मैंने इस मुद्दे पर विचार करते हुए कई दिन बिताए थे कि क्या हमारे कार्यों ने हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को प्रभावित, परिवर्तित किया है या उसमें कोई बदलाव लाया है। वह बहुत ही गंभीर समय था। एक ओर, मैं जानता था कि परमेश्वर संप्रभु है और उसकी योजनाओं को हराया नहीं जा सकता। *"मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती"* (अय्यूब 42:2)। फिर भी, दूसरी ओर, हम पूरी बाइबल में देखते हैं कि परमेश्वर को अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मानवीय आज्ञाकारिता और सहयोग की आवश्यकता होती है। सामान्य "व्यापक" स्तर पर, परमेश्वर अपनी संप्रभुता में वह सब कुछ पूरा करना चाहता है जो उसने समग्र रूप से मानव जाति के लिए निर्धारित किया है। लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर, हमारे कार्य हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रकटीकरण और पूर्ति को प्रभावित करते हैं। यह एक दुखद तथ्य है कि बहुत से मसीही अपने स्वयं के कार्यों के कारण अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उच्चतम और सर्वोत्तम कार्यों को पूरा करने से वंचित रह जाते हैं।

5

बुद्धि-हमारा सुरक्षा कवच

सभोपदेशक 9:16,18
[16] पराक्रम से बुद्धि उत्तम है ...
[18] लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है ...

सभोपदेशक 10:10
... सफल होने के लिए बुद्धि से लाभ होता है।

नीतिवचन 4:7,8
[7] बुद्धि श्रेष्ठ है; इसलिए उसकी प्राप्ति के लिए यत्न कर.
[8] और अपनी सारी प्राप्ति में समझ प्राप्त कर। उसकी बड़ाई कर, वह तुझ को बढ़ाएगी; जब तू उससे लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी।

जैसे-जैसे मैंने इस पर विचार करता हूं, मुझे अपने जीवन के कई विषय याद आये जहाँ मैंने गलतियाँ की थीं। यदि मैंने अधिक मेहनत की होती तो क्या होता? यदि मैंने दूसरे के बजाय इसे चुना होता तो क्या होता? यदि मैंने अपना समय और ऊर्जा किसी अन्य क्षेत्र के बजाय किसी निश्चित क्षेत्र में निवेश किया होता तो क्या होता? यदि मेरे पास उस समय आवश्यक जानकारी और ज्ञान होता—यदि मैं बेहतर जानता होता तो क्या चीजें अलग होतीं? मैं अपने स्वयं के कार्यों के कारण कुछ कठिनाइयों और कष्टों से बच सकता था जिन्हें मैंने सहन किया। जैसे ही मैंने इन बातों पर विचार किया, मैं बस इतना कर सका कि स्वर्ग में पिता को पुकारूँ, उनसे प्रार्थना करूँ कि मैं अपने जीवन में उनके सर्वोत्तम और सर्वोच्चता से वंचित न रहूं। मैं बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लेने के महत्व पर अधिक गंभीरता से विचार करने के लिए भी तैयार हुआ। बुद्धि हमारा कवच है। जब हम बुद्धि से चलेंगे, तो हम सुरक्षित चलेंगे। पवित्र शास्त्र हमें बताता है, *"... बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और*

नियम होता है" (सभोपदेशक 8:5,6)। हर मामले का एक सही समय और एक सही निर्णय होता है। "बुद्धि" जानती है कि किसी स्थिति के लिए क्या करना है, कैसे करना है और कब सही काम करना है।

परमेश्वर का वचन कहता है, *"अपने पांव रखने के लिए मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें"* (नीतिवचन 4:26)। दूसरे शब्दों में, रुकें, विचार करें और अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के बारे में दो या तीन बार सोचें। अक्सर, बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लेते समय, हमें तत्कालीन विषय पर अपना ज्ञान और समझ बढ़ाने के लिए जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। उन लोगों से बात करना और उनसे सीखना बहुत लाभदायक होगा जो किसी विशेष क्षेत्र में अधिक विद्वान और अनुभवी हैं। इसीलिए पवित्र शास्त्र कहता है, *"बुद्धिमान पुरुष बलवान भी होता है, और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान होता है। इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है"* (नीतिवचन 24:5,6)। हमें स्वयं को इतना आध्यात्मिक नहीं समझना चाहिए कि हमें सलाह-मशवरे की आवश्यकता ही न हो।

सेवकाई में, वरदान और अभिषेक करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हालाँकि, उनका अधिकतम उपयोग करने और स्थायी प्रभाव डालने के लिए, हमारे वरदान और अभिषेक, के साथ अच्छे नेतृत्व कौशल, अच्छे संगठन, कड़ी मेहनत, अनुशासन, निरंतर सुधार और बहुत सारी ईश्वरीय बुद्धि को जोड़ना नितांत आवश्यक है।

6
परमेश्वर की भलाई

नीतिवचन 3:5,6

[5] तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
[6] उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।

फिर भी, हमारा सर्वोच्च परमेश्वर अच्छा और दयालु है। वह एक नन्हीं गौरैया को भी नहीं भूलता। यहाँ तक कि हमारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं (लूका 12:6,7)। संप्रभुता में, प्रभु अलौकिक रूप से स्वयं को हमारे दैनिक जीवन के प्रत्येक विषय में शामिल करते हैं। वह हमसे बस इतना चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें और उसे स्वीकार करें, और उसने हमारे मार्गों को निर्देशित करने का वादा किया है। हां, जीवन के कई मुद्दों में ज्ञान और समझ की तलाश करने का दायित्व हम पर है। जैसे ही हम ऐसा करेंगे, हमारे कदम प्रभु द्वारा आदेशित होंगे। *"मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है"* (भजन संहिता 37:23)। परमेश्वर हमारे जीवन में घटनाओं को उस मार्ग पर ले जाने के लिए आदेश देगा जो उसने हमारे लिए निर्धारित किया है। इस प्रक्रिया में, यदि हम अभी भी गलतियाँ करते हैं, ठोकर खाते हैं और गिरते हैं, फिर भी हम पूरी तरह से बर्बाद नहीं होंगे क्योंकि प्रभु हमें संभालते हैं। यह हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के सपने का अंत नहीं होगा। *"चाहे वह गिरे तोभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है"* (भजन संहिता 37:24)। वह हमें अपने पैरों पर खड़ा करेगा और हमें फिर से हमारी यात्रा पर ले चलेगा। उसके लिए परमेश्वर की स्तुति करो!

भजन संहिता 40:1-3

[1] मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।

[2] और उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।
[3] उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।

भजन का रचयिता, दाऊद ने स्वयं को एक "सत्यानाश के गड्ढे" में पाया, उसके पैर "दलदल की कीच" में फंस गए। उसके उस स्थिति में होने के कई कारण हो सकते हैं। परन्तु उसने कहा कि जब वह धैर्यपूर्वक *परमेश्वर की बाट जोहता रहा,* तो यहोवा ने उसकी पुकार सुनी, और उसे गड्ढे से बाहर निकाला, और उसका मार्ग स्थिर किया (भजन संहिता 40:1-3)। हाल्लेलूयाह! यह परमेश्वर की भलाई है। भले ही हम गलतियाँ करें और किसी भयानक गड्ढे में गिर जाएँ, प्रभु हमें उठा सकते हैं और हमें वापस ठोस ज़मीन पर स्थापित कर सकते हैं। हमारी गलतियाँ हमें दुःख पहुँचा सकती हैं। हमारे गलत जानकारी वाले निर्णय देरी का कारण बन सकते हैं। हमारी असफलताएँ विघ्न का कारण बन सकती हैं, लेकिन जब तक हम प्रभु को थामे रहेंगे, वह हमें अपने जीवन में अपनी योजनाओं को पूरा करने में सक्षम बनाएगा। परमेश्वर हमारी असफलताओं से भी बड़ा है। वह हमारी गलतियों से भी बड़ा है। यदि हम अपनी गलतियों से सीखें, समझदार बनें और दौड़ जारी रखें, तो परमेश्वर हमें हमारी अंतिम मंजिल तक ले जाएगा। यह परमेश्वर ही है जो हमारे शोक को नृत्य में बदल सकता है। *"तू ने मेरे लिये मेरे विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बांधा है"* (भजन संहिता 30:11)। परमेश्वर चीजों को बदल कर बुराई को सुन्दरता में बदल सकता है। वह हमारी निराशाओं को दिव्य नियति में बदल देता है। परमेश्वर समय से भी बड़ा है. *"जिन वर्षों की उपज अर्बे नामक टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नामक टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूंगा"* (योएल 2:25)। वह जानता है कि समय की भरपाई कैसे की जाए जो हमारे गलत चुनावों के कारण नष्ट हो गया है।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रकट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकृत हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर** परिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार / दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिएः

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

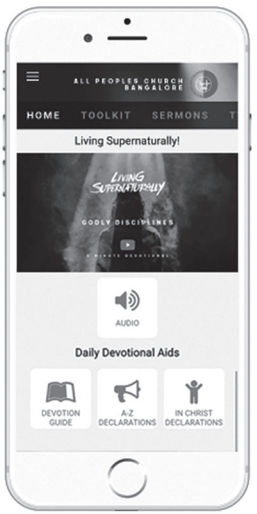

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

यह सच है कि अपूर्ण होते हुए भी हम सभी गलतियाँ करते हैं। जिन स्थितियों का हम पहली बार सामना करते हैं उनमें गलत निर्णय के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। हमारे गलत चुनाव उस योजना को कैसे प्रभावित करते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनाई है? क्या हमारी गलतियाँ हमारे जीवन में परमेश्वर के उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ के पराजित, परिवर्तित या किसी भी तरह से पूरा होने से रोकती हैं?

इस पुस्तक का उद्देश्य हमें हमारे मसीही विश्वास के व्यावहारिक पक्ष के प्रति जागृत करना है। इसका उद्देश्य हमें अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने में हमारी गंभीर जिम्मेदारी समझाना है। यह हमारे कार्यों को आध्यात्मिक बनाना बंद करने और उनके लिए जिम्मेदारी लेने की चुनौती है। यह इस जीवन के मामलों में "समझदार बनने" का एक उपदेश है।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org